# संगीत नाटक समाचार

संगीत नाटक अकादेमी

Sangeet Natak Akademi

अंक 17 ◆ जून – जुलाई 2008


## अकादेमी के पदाधिकारी

*अध्यक्ष*
**श्री राम निवास मिर्धा**

*उपाध्यक्ष*
**श्री कावालम नारायण पनिक्कर**

*वित्तीय सलाहकार*
**श्री ई. के. भारत भूषण**

*सचिव*
**श्री जयंत कस्तुआर**

## इस अंक में


मध्य क्षेत्र के युवा रंगमंच कलाकारों की दिल्ली में कार्यशाला 1

नृत्य प्रतिभा, शिमला 3

नृत्य संरचना, हैदराबाद 4

संगीत नाटक अकादेमी पुस्तकालय 5

दिल्ली में अकादेमी के मासिक कार्यक्रम 5

संगीत नाटक अकादेमी के घटक एकक और केन्द्र 6

प्रलेखन 6

स्मृति में 6


# मध्य क्षेत्र के युवा रंगमंच कलाकारों की दिल्ली में कार्यशाला

संगीत नाटक अकादेमी युवा रंगमंच कलाकारों को सहायता की अपनी योजना के तहत पिछले कई वर्षों से रंगमंच कलाकारों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करती रही है। कार्यशाला दो चरणों में होती है: कार्यशाला के पहले चरण – राज्य स्तर – में रंगमंच के सभी पहलुओं में प्रारम्भिक प्रशिक्षण दिया जाता है जबकि दूसरे चरण – क्षेत्रीय स्तर – में गहन प्रशिक्षण दिया जाता है ताकि रंगमंच कलाकार अपनी आगे की दिशा के बारे में निर्णय ले सकें।

पहले चरण के तहत पंचमढ़ी (मध्य प्रदेश), इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) और खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) में कार्यशालायें आयोजित की गई जिनमें क्रमशः श्री अलखनंदन, श्री सचिन तिवारी और श्री सतीश आनन्द कार्यशाला निदेशक रहे।

दूसरे चरण में उत्तर और पूर्व क्षेत्रों के लिए क्रमशः दिल्ली और कोलकाता में दो कार्यशालायें आयोजित करने के पश्चात अकादेमी ने मध्य क्षेत्र के रंगमंच कलाकारों के लिए 16 जून से 29 अगस्त 2008 तक संस्कृति केन्द्र, आनन्द ग्राम, नई दिल्ली में 75 दिनों की कार्यशाला का आयोजन किया। श्री सतीश आनन्द कार्यशाला निदेशक और श्री सुमन कुमार कार्यशाला समन्वयक रहे।

कार्यशाला के आयोजनकर्ताओं में श्री के. एन. पनिक्कर (तिरूवनन्तपुरम, केरल), श्री रतन थियाम (इम्फाल, मणिपुर), डा. के. डी. त्रिपाठी (वाराणसी, उत्तर प्रदेश), श्री भास्कर चंदावरकर (पुणे, महाराष्ट्र), श्री रूद्रप्रसाद सेनगुप्ता (कोलकाता, पश्चिम बंगाल), श्री एच. कन्हाई लाल एवं श्रीमती सावित्री एच. (इम्फाल, मणिपुर), श्री निरंजन गोस्वामी (कोलकाता, पश्चिम बंगाल), श्री शेखर वैष्णवी (दिल्ली), श्री जी. एस. चन्नी (चंडीगढ़), डा. जयदेव तनेजा (दिल्ली), श्री सचिन तिवारी (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश), श्री शशधर आचार्य (दिल्ली), श्री अलखनंदन (भोपाल, मध्य प्रदेश), श्री एच. वी. शर्मा (दिल्ली), श्री प्रोबीर गुहा (कोलकाता,

*सचिव (संस्कृति) श्री अभिजीत सेनगुप्ता, नई दिल्ली में आयोजित मध्य क्षेत्र के युवा रंगमंच कलाकारों की कार्यशाला में भाग लेने वाले कलाकार को पुरस्कार देते हुए। अनकी दायीं ओर हैं श्रीमती पोइली सेनगुप्ता और उनकी बायीं ओर अकादेमी सचिव श्री जयंत कस्तुआर।*

पश्चिम बंगाल), श्री कन्नन पी (केरल), श्री सुरेश भारद्वाज (दिल्ली), श्री सलीम आरिफ (मुम्बई, महाराष्ट्र), श्री गौतम भट्टाचार्य (दिल्ली), डा. एन. के. जैन (दिल्ली), श्री प्रभाकर भावे (पुणे, महाराष्ट्र), श्रीमती अम्बा सान्याल (दिल्ली), श्री बिरजीत न्गांगोम्बा (इम्फाल, मणिपुर), और श्री नरेश कुमार (दिल्ली)।

कार्यशाला में छत्तीसगढ़ से अविनाश मिश्रा, हेमन्त गंधर्व, लता सांगड़े, प्रशांत कुमार गुप्ता, राजेश सोनी, राजकिशोर पटेल और विराट शर्मा, मध्य प्रदेश से आशीष शर्मा, भूपेन्द्र निगम, हेमन्त देवलेकर, जितेन्द्र टटवाल, कमलेश मालवीय, नीरज इन्द्रवती कुंदेर, रवीन्द्र खुशवाहा और प्रियंका ठाकुर, उत्तर प्रदेश से अनीता गुप्ता, ममता पंडित, पंकज कुमार पाण्डेय, राजेश, राजू सिंह चौहान, ऋषि रंजन सिंह, शाह फैज़ल और विशाल कुमार ने भाग लिया।

29 अगस्त 2008 को कार्यशाला के अन्तिम दिन मुख्य अतिथि श्री अभिजीत सेनगुप्ता, सचिव (संस्कृति) और श्रीमती पोइली सेनगुप्ता ने अनन्त ग्राम (दिल्ली) में प्रशिक्षणार्थियों को प्रमाण पत्र प्रदान किये। अकादेमी अध्यक्ष श्री राम निवास मिर्धा और सचिव श्री जयंत कस्तुआर ने प्रशिक्षणार्थियों को सम्बोधित किया।

प्रशिक्षणार्थियों द्वारा निर्देशित और अभिनीत नाटकों में विराट शर्मा (छत्तीसगढ़) द्वारा निर्देशित *अन्तिम इच्छायें,* नीरज इन्द्रवती कुंदेर (मध्य प्रदेश) द्वारा निर्देशित *तैया तैय्यम;* और पंकज कुमार पांडेय (उत्तर प्रदेश) द्वारा निर्देशित *धूर्तसमागम* शामिल हैं। इस कार्यक्रम में प्रख्यात रंगमंच हस्तियों और मीडिया ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

*ऊपरः श्री अभिजीत सेनगुप्ता, सचिव (संस्कृति), श्रीमती पोइली सेनगुप्ता, श्री जयन्त कस्तुआर (सचिव, संगीत नाटक अकादेमी), श्री ओ. पी. जैन (संस्थापन अध्यक्ष, संस्कृति), श्री निरंजन गोस्वामी (मूकाभिनेता), श्री सतीश आनन्द (कार्यशाला निदेशक), श्रीमती किरण भटनागर (उप–सचिव, ड्रामा), श्री सुमन कुमार (कार्यशाला समन्वयक) विदाई समारोह के पश्चात् कार्यशाला में भाग लेने वालों के साथ।*

*बीच में : विराट शर्मा (चंडीगढ़) द्वारा निर्देशित* अन्तिम इच्छायें।

*नीचे : पंकज कुमार पांडेय (उत्तर प्रदेश) द्वारा निर्देशित* धूर्तसमागम।

# नृत्य प्रतिभा, शिमला

नृत्य प्रतिभा नृत्य उत्सवों की एक शृंखला है जिसे संगीत नाटक अकादेमी ने 1985 में युवा कलाकारों को राष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शन का अवसर देने के उद्देश्य से आरम्भ किया गया। उत्तरी क्षेत्र के लिए नृत्य प्रतिभा का आयोजन भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार के सहयोग से 6-10 जून 2008 को शिमला में किया गया। दिल्ली, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तरांचल के कलाकारों ने इस उत्सव में अपनी कला का प्रदर्शन किया। व्यापक प्रतिनिधित्व के लिए अन्य राज्यों के कुछ नर्तकों को भी आमंत्रित किया गया।

हिमाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने 6 जून 2008 को श्रीमती सरवीन चौधरी, सामाजिक न्याय और सहकारिता मंत्री, प्रो. सुनील कुमार गुप्ता, उप–कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय श्री बी. के. अग्रवाल, सचिव, डा. प्रेम शर्मा, निदेशक, भाषा, कला और संस्कृति विभाग, हिमाचल प्रदेश सरकार और अकादेमी सचिव श्री जयंत कस्तुआर की उपस्थिति में उत्सव का उद्घाटन किया। उत्सव की भूरि–भूरि प्रशंसा की गई और दूरदर्शन तथा पत्र पत्रिकाओं आदि में इसे व्यापक तौर पर प्रसारित किया गया।

**कार्यक्रम विवरण :**

6 जून

सुप्रिया नायक, दिल्ली : ओडिसी

लोकेश भारद्वाज, दिल्ली : भरतनाट्यम

परफार्मिंग आर्टिस्ट सेन्टर, इम्फाल : पुंग चोलम

रूक्मिणी जायसवाल, लखनऊ : कथक

7 जून

द्विजेन बर्मन और परिस्मिता भराली, श्री श्री बदाला पदमा अटा सत्तरा, नारायण पुर, गुवाहाटी : सत्रिय

श्लोका वैद्यालिंगम, दिल्ली : कूचिपूड़ि

अनन्या मिश्रा, वाराणसी : कथक

सुदीप ए. मोहन, त्रिवेन्द्रम : कथकलि

8 जून

अकादेमी की छउ परियोजना के कलाकार : छउ (सरायकेला)

शैल्जा नलवाडे, दिल्ली : कथक

स्वप्ना नायर, दिल्ली : मोहिनीआट्टम

दीपा जोशी, नैनीताल : कथक

परफार्मिंग आर्टिस्ट सेन्टर, इम्फाल, बसंत रास

9 जून

रेखा अधिकारी, अल्मोड़ा : कथक

आशा कुमारी, गुड़गांव : ओडिसी

दीपा शिवानंद, दिल्ली : भरतनाट्यम

मिकी वर्मा और विशाल कुमार, शिमला : कथक

10 जून

संगीता नेगी, पंचकुला : कथक

भाग्य लक्ष्मी त्यागराजन, नोएडा : भरतनाट्यम

पल्लवी डे, दिल्ली : कथक

अकादेमी की छउ परियोजना के कलाकारः छउ (मयूरभंज)

ऊपर बायें से दायें: *रुक्मिणी जायसवाल (कथक), श्लोका वैद्यालिंगम (कूचिपूड़ि)*

नीचे बायें से दायें: *श्री श्री बदाला पदमा अटा सत्तरा (सत्रिय), सुदीप ए. मोहन (कथकलि)*

# नृत्य संरचना, हैदराबाद

संगीत नाटक अकादेमी आरम्भ से ही भारतीय नृत्य की नृत्य संरचनाओं को काफी महत्व देती रही है। अकादेमी की संगीत, नृत्य और रंगमंच पर समकालीन संरचनाओं को सहायता और समर्थन देने की योजना के अन्तर्गत नृत्य संरचनाओं के उत्सवों पर राबिन्द्र नाट्योत्सव, उदय शंकर शताब्दी समारोह जैसे विशेष उत्सव और सेमिनार समय–समय पर आयोजित किये जाते रहे हैं। यह योजना नौवीं योजना के तहत आरम्भ की गई थी और इसका उद्देश्य समकालीन नृत्य संरचनाकारों और रचनाकारों की प्रायोगिक संरचनाओं को सहायता देना है।

नृत्य संरचना – विशेष रूप से 'संख्या' विषय पर तैयार किया गया नृत्य संरचनाओं का उत्सव – रविन्द्र भारती ऑडिटोरियम, हैदराबाद में 21-25 जुलाई 2008 को प्रस्तुत किया गया। यह उत्सव संगीत नाटक अकादेमी द्वारा संस्कृति विभाग, आन्ध्र प्रदेश सरकार और शंकरानंद कलाक्षेत्र, हैदराबाद के सहयोग से आयोजित किया गया।

इस उत्सव में पदमा सुब्रामण्यम, सोनल मानसिंह, राजा और राधा रेड्डी, भारती शिवाजी, स्वप्नसुन्दरी और आर. के. सिंहजीत सिंह समेत विभिन्न नृत्य शैलियों के प्रसिद्ध और वरिष्ठ नृत्य संरचनाकारों की नृत्य संरचनाओं का प्रदर्शन किया गया।

हैदराबाद के दर्शकों ने उत्सव की भरपूर प्रशंसा की और पत्र–पत्रिकाओं तथा दूरदर्शन पर विस्तार से इसका प्रसारण हुआ। कार्यक्रम का ब्यौरा नीचे दिया गया है:

21 जुलाई
*दशवतारम (मोहिनीआट्टम)*
नृत्य संरचनाकार : भारती शिवाजी,
मोहिनीआट्टम केन्द्र, दिल्ली

*नवरस (भरतनाट्यम)*
नृत्य संरचनाकार : आनंद शंकर जयंत
शंकरानन्द कलाक्षेत्र, हैदराबाद

22 जुलाई
*अष्ट नायिका : मणिपुरी*
नृत्य संरचनाकार : सिंघजीत सिंह
नृत्य आश्रम, दिल्ली और जे.एन.एम.डी.ए., इम्फाल

*सप्त आवर्त (कथक)*
नृत्य संरचनाकार : प्रेरणा श्रीमाली, कथक केन्द्र, दिल्ली

*ऊपर: द्वैत (कूचिपूड़ि) राजा और राधा रेड्डी द्वारा। बीच में: दशवतारम (मोहिनीआट्टम) भारती शिवाजी द्वारा। नीचे बायें: अद्वैत (भरतनाट्यम) पदमा सुब्रामण्यम द्वारा। नीचे दायें: शून्य (ओडिसी) सोनल मानसिंह द्वारा।*

23 जुलाई
*शत्रुतू (विलासिनी नाट्यम)*
नृत्य संरचनाकार : स्वप्न सुन्दरी, दिल्ली

*पंचभूत (समकालीन)*
नृत्य संरचनाकार : अनिता रतनम, आरंघम नृत्य रंगमंच, चेन्नई

24 जुलाई
*चतुर्वेद (कथक)*
नृत्य संरचनाकार : राजाश्री शिरके, लास्य नृत्य अकादेमी, मुम्बई

*त्रिमूर्ति (छउ)*
नृत्य संरचनाकार : शशधर आचार्य
संगीत नाटक अकादेमी का छउ केन्द्र

25 जुलाई
*द्वैत (कूचिपूड़ि)*
नृत्य संरचनाकार : राजा–राधा रेड्डी, दिल्ली

*अद्वैत (भरतनाट्यम)*
नृत्य संरचनाकार : पदमा सुब्रामण्यम, चेन्नई

*शून्य (ओडिसी)*
नृत्य संरचनाकार : सोनल मानसिंह, दिल्ली

# संगीत नाटक अकादेमी पुस्तकालय

## पत्र पत्रिकाओं में छपी खबरों का डिजिटीकरण

गत वर्षों में अकादेमी पुस्तकालय संगीत, नृत्य, नाटक तथा अन्य प्रदर्शन कलाओं पर समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित मूल्यवान संगत जानकारी एकत्र करता रहा है और उसे फाईलों में सुरक्षित रखते रहा है। प्रौद्योगिकी में सुधार होने पर अकादेमी पुस्तकालय ने पिछले कुछ महीनों से उपरोक्त जानकारी का डिजिटीकरण आरम्भ कर दिया है। अभी तक समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं की पचास हजार कतरनों का डिजिटीकरण किया गया है।

# दिल्ली में अकादेमी के मासिक कार्यक्रम

## पारम्परिक पुतुलकला / रंगमंच / फिल्म / वीडियो रिपोर्ट

### पोरात्तूनाटकम : केरल का पारम्परिक रंगमंच

अकादेमी की पारम्परिक प्रदर्शत कलाओं को प्रोत्साहन तथा संरक्षण देने की योजना के तहत संगीत, नृत्य और रंगमंच की उन शैलियों में प्रशिक्षण में सहायता दी जाती है जिन के लुप्त होने की आशंका होती है। प्रोत्साहन के तौर पर अकादेमी शिक्षकों को मानदेय और छात्रों को छात्रवृति देती है ताकि अध्ययन–अध्यापन की पारम्परिक प्रक्रिया के माध्यम से इन कलाओं को जीवित रखा जा सके।

इस योजना के अन्तर्गत केरल के पारम्परिक रंगमंच पोरात्तूनाटकम में एक प्रशिक्षण कार्यक्रम श्री मनूर चन्द्रन के निर्देशन में प्रारम्भ किया गया था। पोरात्तूनाटकम का 15 जुलाई 2008 को मेघदूत रंगशाला – 2 नई दिल्ली में मंचन किया गया।

पोरात्तूनाटकम का मंचन जिसका शाब्दिक अर्थ 'विनोदशील रंगमंच' है, फसल के पश्चात् एक खुले खेत में विशेष रूप से बनाये गये मंच पर किया जाता है जिसमें अभिनेताओं को दर्शकों से अलग करने के लिए एक परदा लगाया जाता है। समय–समय पर ये नाटक मंदिरों में भी प्रदर्शित किये जाते हैं।

इसके कलाकार पानन जाति के हैं और गाने में अपनी उत्कृष्ठता के लिए प्रसिद्ध हैं। कथकलि की तरह, दो मुख्य संगीतज्ञ पीछे मंच पर रहते हैं जो मुख्य अभिनेताओं से प्रश्न पूछते हैं। प्रश्नों का उत्तर देते समय अभिनेता नाटक की कथावस्तु का अनावरण करते हैं। नाटक के चरित्र अभिनेता सामान्यतः धोबी–धोबिनों जैसे साधारण लोगों में से लिये जाते हैं और कथानक गांव के जीवन से संबंधित होता है जिसमें हंसी, मज़ाक, व्यंग्य और सामाजिक आलोचना की अनेक स्थितियों का चित्रण किया जाता है। इस प्रदर्शन में मृदंगम, मजीरा, पृष्ठनाद और चप्लमकट्टा जैसे संगीत वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

### चंदायनी : छत्तीसगढ़ का पारम्परिक रंगमंच

बिलासा लोक कला मंच, छत्तीसगढ़ के कलाकारों ने श्री सोमनाथ यादव के निर्देशन में 18 जुलाई 2008 को मेघदूत रंगशाला–2 नई दिल्ली में छत्तीसगढ़ के पारम्परिक रंगमंच चंदायनी का मंचन किया।

चंदायनी छत्तीसगढ़ में प्रचलित पारम्परिक लोक गाथागीत की एक शैली

*नीचे : चंदायनी, छत्तीसगढ़ का पारम्परिक रंगमंच*
*सबसे नीचे : पोरात्तूनाटकम, केरल का पारम्परिक रंगमंच*

है और दो प्रसिद्ध चरित्रों – लोरिक और चंदा के बीच प्रेम पर आधारित है। राजकुमारी चंदा एक नपुंसक व्यक्ति से विवाहित है और उसका लोरिक, एक विवाहित व्यक्ति से प्रेम संबंध हो जाता है। उनका बाद में सहपलायन और उनके सामने आने वाले जोखिम चंदायनी के प्रासंगिक वृत्त हैं। पृष्ठ भूमिका संगीत के लिए हारमोनियम और तबला जैसे पारम्परिक वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

## संगीत नाटक अकादेमी के घटक एकक और केन्द्र

### *सत्रिय केन्द्र, गुवाहाटी*

संगीत नाटक अकादेमी ने 15 जुलाई 2008 को गुवाहाटी में सत्रिय केन्द्र के नाम से सत्रिय नृत्य, संगीत और रंगमंच परम्पराओं के लिए एक केन्द्र की स्थापना की।

अकादेमी द्वारा असम के सत्रिय नृत्य एवं सम्बद्ध परम्पराओं को समर्थन देने की परियोजना, इसके पारम्परिक संदर्भ में परम्परा को सुरक्षित रखने और बनाये रखने और इसके आगे विकास का प्रावधान करने के उद्देश्य से नवम्बर 2002 में आरम्भ की गई। परियोजना में नृत्य संस्थाओं तथा पहचाने गये सत्रों में प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए सहायता देने का प्रस्ताव है। सत्रिय नृत्य और संगीत के प्रशिक्षण और विकास के अलावा परियोजना के तहत इस विषय पर शोध, प्रलेखन और प्रकाशन के लिए वित्तीय सहायता दी जाती है। सत्रिय नृत्य का वार्षिक उत्सव और असम से बाहर सत्रिय नृत्य की प्रस्तुति भी इस परियोजना का अंग है।

## *प्रलेखन*

**नृत्य प्रतिभा,** युवा नर्तकों का उत्सव, शिमला, 6-10 जून 2008
*वीडियो 12.25 घंटे, फोटो 350*

**राजस्थान की कठपुतली पर प्रशिक्षण कार्यक्रम,** दिल्ली, 11 जुलाई 2008
*वीडियो 2.10 घंटे*

**'पोररात्तूकाली' पर विशेष प्रलेखन,** दिल्ली 16 जुलाई 2008 *वीडियो 1.00 घंटा, फोटो 50*

**चंदायनी, छत्तीसगढ़ का पारम्परिक रंगमंच,** दिल्ली, 18 जुलाई 2008
*वीडियो 1.45 घंटे, फोटो 60*

**नृत्य संरचना,** नृत्य संरचनाओं का समारोह, हैदराबाद, 21-25 जुलाई 2008
*वीडियो 12.00 घंटे, फोटो 390*

**श्री अम्मान्नूर माधव चाक्यार पर शोक–सभा,** दिल्ली 17 जुलाई 2008
*वीडियो 1.00 घंटा*

## स्मृति में

संगीत नाटक अकादेमी तथा इसकी सम्बद्ध संस्थाएं यशस्वी कूटियाट्टम संगीतज्ञ तथा अकादेमी रत्न सदस्य गुरू अम्मान्नूर माधव चाक्यार के दुःखद निधन पर गहरा शोक व्यक्त करती हैं।

### अम्मान्नूर माधव चाक्यार

इरीनजलकुडा (केरल) में 1917 में जन्में अम्मान्नूर माधव चाक्यार का संबंध चाक्यार परिवार–केरल के संस्कृत रंगमंच कूथू और कूटियाट्टम के पारम्परिक अभिनेताओं से था। उन्होंने अपने काकाओं – अम्मान्नूर चाचू चाक्यार, माधव चाक्यार से और कोदूगाल्लूर कोविलाकम के भागवातार कुंजून्नी थम्पूरन से प्रशिक्षण प्राप्त किया।

गुरू अम्मान्नूर माधव चाक्यार ने दोनों अभिनेता और शिक्षक के रूप में कूटियाट्टम कला में काफी योगदान किया। वह सभी प्रमुख भूमिकाओं में प्रवीण थे और उन्होंने कुछ अंकों तथा नाटकों के लिए, जो समकालीन कूटियाट्टम में विलीन हो गये, अट्टा प्राक्रम या अभिनेताओं की नियमावलियां भी तैयार की। उन्होंने केरल कलामंडलम चेरूथूरूथी में और मार्गी, तिरूवनन्तपुरम में अध्यापन किया। तत्पश्चात् उन्होंने इरीनज़ल कुडा में अम्मान्नूर चाचू चाक्यार स्मारक गुरूकुलम की स्थापना की।

1991 में कूटियाट्टम के संरक्षण के उद्देश्य से संगीत नाटक अकादेमी द्वारा आरम्भ की परियोजना का विकास उनके कार्यकाल में ही हुआ जब वे मुख्य गुरू थे। अकादेमी की कूटियाट्टम परियोजना के तहत उनके रचनात्मक नेतृत्व के कारण ही 'यूनेस्को' ने इस प्राचीन कला को अन्ततः 2001 में मानवता की मौखिक और दुर्बोध विरासत की श्रेष्ठ कृति के रूप में मान्यता प्रदान की। गुरू अम्मान्नूर के काम के परिणामस्वरूप ही 2007 में तिरूवनन्तपूरम में कूटियाट्टम केन्द्र की स्थापना हुई।

अपने जीवनकाल के दौरान पूजनीय चाक्यार ने संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार (1979), पद्मश्री (1982), कालीदास सम्मान (1992), संगीत नाटक अकादेमी की रत्न सदस्यता (1996), और पद्म भूषण (2003) समेत अनेक सम्मान प्राप्त किये।

गुरू अम्मान्नूर माधव चाक्यार का इरीनजल कुंडा में अपने गृह और गुरूकुलम में 1 जुलाई 2008 को निधन हो गया।

*निजी परिचलन हेतु।* *प्रकाशक, सचिव, संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली 110 001. फोनः 23387246/7/8. फैक्सः 23381621. ईमेलः sangeetnatak@bol.net.in. डिज़ाइन व प्रोडेक्शनः stetdelhi@gmail.com*